शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएं

संतोष मीणा (शोधार्थी)
हिन्दी विभाग
वनस्थली विद्यापीठ
राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

हिन्दी उपन्यासों में भारतीय नारी के जीवन की विविध समस्याओं को अनेक विध रूपों में चित्रित किया गया है। प्रसिद्ध उपन्यासकार अमृतलाल नागर की स्त्री की ओर देखने की विषेष दृष्टि रही है। अपने कथानक के माध्यम से उन्होंने स्त्री मन की गहराइयों स्पर्ष किया है। उनका लेखन स्त्री मुक्ति की वकालत करता है। तत्कालीन सामाजिक ढांचे ने स्त्री को जिस प्रकार जकड़ रखा था, उससे मुक्त करने की छटपटाहट अमृतालाल नागर के लेखन में दृष्टिगत होती है। प्रस्तुत शोध पत्र में उनके उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन की समस्याओं को देखा गया है।

प्रस्तावना

आज विश्व के सभी देशों में नारी स्वतंत्रता, नारी स्वावलंबन और नारी पुरुष समानता की बात की जाती है, किंतु वास्तविक स्थिति यह है कि आज भी समाज में नारी की स्थिति संतोषजनक नहीं है। समाज में विभिन्न स्तरों पर नारी को अन्याय और अत्याचार का सामना करना पड़ रहा है। पुरुष प्रधान संस्कृति में स्त्री को भोग्या के रूप में ही देखा जाता है। स्त्री में जो गुण हैं, कौशल है, उसे भुलाकर मात्र उसके रंग एवं रूप को देखा जात है। तस्लीमा नसरीन के अनुसार, "जिस दिन यह समाज स्त्री शरीर का नहीं, शरीर के अंग-प्रत्यंग नहीं, स्त्री की मेधा और श्रम का मूल्य सीख जाएगा, उस दिन 'स्त्री मनुष्य रूप में स्वीकृत होगी।"1

उपन्यासों में नारी समस्याएं

अमृतलाल नागर ने अपने उपन्यासों में नारी जीवन की अनेक समस्याओं को चित्रित किया है। 'अग्निगर्भा' उपन्यास में नागर जी कहते हैं, "नारी युगों-युगों से प्रताड़ित रही है। कभी उसे चुराया गया तो कभी उसे बेचा गया। आज भी सूनी सड़कों पर नारी का अकेले निकलना कठिन है। नारी अत्याचार नहीं अपहरण, वेश्यावृत्ति का व्यापार प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष विद्यमान है।"2

इसी उपन्यास में सीता कहती है, "आज स्त्री-पुरुष दोनों ही के समानाधिकार हैं झूठ-मूठ, बिलकुल झूठ। स्त्री भले ही पुरुष की बराबरी में अंतरिक्ष तक उठ गइ हो, तीन-तीन लोकतांत्रिक देषों में प्रधानमंत्री बन चुकी हो पर आधनिक नारी आज भी पाषाण युग की तरह ही त्रस्त है।"3 नागर जी ने अपने उपन्यासों में नारी की अनेक समस्याएं जैसे यौन शोषण, अनमेल विवाह, विधवा नारी का तिरस्कार, दहेज समस्या, वेश्यावृत्ति आदि समस्याओं को उजागर किया है। यौन समस्या समाज की प्रमुख समस्याओं में से एक है। यौन संबंधों में जब वासना का भाव आ जाए तो इसकी पवित्रता नष्ट हो जाती है। काम संबंध पर आधारित प्रेम पुरुष को शोषण करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है। वर्तमान समाज में पुरुष को नारी की अपेक्षा अधिक सुविधाएं प्राप्त

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हैं, जिनका उपयोग वह अपने लिए विलास के साधन जुटाने में करता है। परिणामस्वरूप् नारी पुरुष शोषण की षिकार होती है। देह भाग पर आधारित प्रेम अनुचित नहीं है किंतु वर्तमान समाज में इस दृष्टि से नारी का शोषण हो रह है। काम भी इंसान की कुदरती जरूरत है। इस संबंध में 'बूंद और समुद्र' उपन्यास की वनकन्या कहती है, "मैंने इस देह भाग के शोक को राक्षसी भूख बनकर अपने घर में दो जानें ले जाते देखा है।"4

अमृतलाल नागर के 'नाच्यौ बहुत गोपाल' की निर्गुणिया भी अनेक प्रेमियों तथा स्वामियों के पुत्रों की काम वासना का षिकार होती है। उसकी देह के साथ अनेक पुरुषों द्वारा निर्मम खिलवाड़ किया जात है।

प्रभा खेतान के अनुसार, "धर्म और संस्कृति की नजर स्त्री के प्रति हमेषा टेढ़ी रही, राजनीति उसे हमेषा मोहरा बनाती रही और भक्ति पुरुष ने उसे कभी ड्राइंगरूम का सामान समझा, तो कभी बेडरूम का बिछौना, पुरुष चाहे कहीं भी हो, कोई भी हो वह षिल्पी साहित्यकार, व्यवसायी, मजदूर कुछ भी क्यों न हो, औरत को दबाने से बाज नहीं आता।"5 दहेज और बाल-विवाह के समान ही अनमेल विवाह की घातक कुप्रथा भारतीय समाज में बहुत समय तक विद्यमान रही। आधुनिक युग में षिक्षा प्रचार के द्वारा यह प्रथा तो प्रायः नष्ट हो चुकी है, किंतु गांवों में इसका प्रचलन अब भी शेष है। अनमेल विवाह की प्रमुख समस्या माता-पिता की ओर से पर्याप्त सावधानी का अभाव है। हिंदू परिवारों में विवाह युवक-युवती स्वतंत्र रूप से नहीं करते, उसके पीछे माता-पिता का हाथ रहता है। पुत्री तो शत-प्रतिषत माता-पिता की इच्छा-अनिच्छा पर ही निर्भर रहती है।

'नाच्यौ बहुत गोपाल' की निर्गुणिया का विवाह मसुरियादीन से करा दिया जाता है जो उम्र में उसके पिता से भी सात साल बड़ा है। जो निर्गुणिया की दैहिक एवं मानसिक क्षुधा को परितृप्त करने में पूर्णरूप से अक्षम है। परिणामतः निर्गुण विद्रोह कर मोहन मेहतर से विवाह कर लेती है।

'करवट' उपन्यास में प्रगतिषील विचारों की चंपकलता अनमेल विवाह का सषक्त शब्दों में विरोध करती है। "हमं सामाजिक बुराइयों पर चुप नहीं बैठे रहना चाहिए। मैं एक परचा लिखूंगी और आपके सारी बिरादरी में गलियों, मोहल्लों की दूसरी बिरादरियों में बंटवाउंगी। भला यह भी कोई बात हुई कि एक बारह वर्ष की कुंवारी कच्ची कली-सी लड़की पचास बरस के बंदर के साथ ब्याह दी जाए।"6 नागर जी ने अनमेल विवाह का विरोध किया है। आज धीरे-धीरे यह समस्या कम हो रही है। स्त्री षिक्षा से स्त्रियां अपने अधिकारों के प्रति सचेत हुई हैं।

दहेज प्रथा समाज के माथे पर कलंक है। यह वह पिषाच है, जो नारी की दयनीय स्थिति के लिए उत्तरदायी है। मध्यवर्ग में पुत्री के विवाह के लिए माता-पिता की चिंता इस सामाजिक कुप्रथा के कारण ही है। समाज को इस कुरीति ने इतनी मजबूती से जकड़ रखा है कि निकट भविष्य में इससे मुक्ति पाना असंभव दिखाई देता है।

'करवट' उपन्यास में दहेज प्रथा के कारण उत्पन्न आर्थिक संकट हरसोमल और उसकी पत्नी दोनों के प्राण हर लेता है। 'अग्निगर्भा' उपन्यास के माध्यम से नागर जी ने भारतीय समाज में दहेज और नारी दमन के निकृष्टतम रूपों से साक्षात्कार कराया है। इस उपन्यास का रामेष्वर अपनी माता के सामने जब अपने विवाह का प्रस्ताव रखता है तो उसकी मां सीता से विवाह

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

का विरोध करती है, क्योंकि वह अपने साथ कम दहेज लाएगी। रामेष्वर की माता कहती है, "मिजाह हम कोनक न बिगाडउ भुला दहेज तक मरजद के पता है। चार जने उंगली उठैबे कि लरिका मां ऐसा कौन खोट रहा जौ दहेज न मांगिब। हम एक लाख से कम न लेब, चाहे ईमान ते सुना चाहे उनि काम से सुना ? एक बहुरिया तो हमरे हाथ से निकलि गई। दुसर की का अपनी मर्जी से राखव। ईमा तुम्हार कि रामे क्यार जिद न चले।"7

हिन्दू समाज में विधवा समस्या आज भी अपने भयंकर रूप में व्याप्त है। समाज में नारी जीवन पुरुष वर्ग के तिरस्कार, दमन तथा उपेक्षा भावना का षिकार रहा है, लेकिन सबसे अधिक अत्याचार और शोषण का शिकार विधवा नारी हुई है। मध्यकालीन हिन्दू समाज में विधवा की स्थिति चिंतनीय रही। पति की मृत्यु के बाद पत्नी या तो स्वेच्छा से सती हो जाती थी या समाज के रुढ़िवादी व्यक्तियों के द्वारा चिता पर धकेल दी जाती थी। "पति प्रेम नारी जीवन का आधार है। उससे वंचित होकर अबला निराधार हो जाती है।"8 नागर जी समाज में विधवाओं की विंडबनापूर्ण स्थिति से व्यथित होकर अपने उपन्यासों में इस समस्या पर पूर्ण रूप से विचार किया है।

'बूंद और समुद्र' उपन्यास में जगदम्बा सहाय के भतीजे की बहू विवह के चार-पांच वर्ष बाद ही विधवा हो जाती है और मास्टर जगदम्बा सहाय के यहां रहती है इसलिए उस पर हर तरह का मालिकाना हक जताते हैं। उसके साथ जगदम्बा सहाय अनैतिक कार्य करने से भी नहीं झिझकते, किंतु जब वह गर्भवती हो जाती है तो जगदम्बा बाबू पाक-साफ बच जाते हैं। अत उसके समक्ष जलकर मरने के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं बचता। 'अमृत और विष' उपन्यास में नागर जी कहते हैं, "विधवा होने में कोई बुराई नहीं आती। हमने ऐसी सैकड़ों सती विधवाएं देखी हैं कि उन्हें देखकर मन में इज्जत पैदा होती है। कसूर सारा मर्द का है। सदा से औरत को यही लोग बिगाड़ते चले आए हैं।"9

वेश्याओं की समस्या भारतीय समाज में नारी जीवन की सबसे गंभीर और चिर-परिचित समस्या है। वेश्यावृत्ति एक अभिशाप है। यह एक घृणित समस्या है जो समस्त समाज को अस्वस्थ और विकृत कर देती है। वेश्याओं का जीवन नारकीय है, अपने नारीत्व को तिल-तिल करके बेचने पर भी वे केवल मन से ही नहीं तन से भी भूखी और अकिंचन ही रहती हैं। नागर जी वेश्याओं के प्रति बड़े उदार हैं। उन्होंने कभी भी इस वर्ग की निंदा नहीं की और न ही उनसे घृणा की। वेश्यावृत्ति का उन्होंने कठोरता से विरोध किया है। 'सुहाग के नुपूर' में माधवी के चरित्र के माध्यम से वेश्यावृत्ति के मूल तक जाने का प्रयास किया है। माधवी समस्त वेश्या वर्ग की तड़प और विवशता की प्रतीक है। नागर जी के 'ये कोठेवालियां' उपन्यास में लल्लू की मां भी आर्थिक् विपन्नता से विवश होकर वेश्यावृत्ति करने पर मजबूर होती है। वेश्या बना देने के पश्चात हमारा समाज उस भद्र महिला का मखौल उड़ाता है। 'शतरंज के मोहरे' उपन्यास में भी कुल्सुम जैसी सैकड़ों युवतियां रोज उड़ा ली जाती हैं।

अमृतलाल नागर जी ने अपने उपन्यासों में नारी जीवन की विविध समस्याओं का चित्रण किया तथा उनका विरोध भी किया, जिससे नारी जीवन में सुधार आए।

संदर्भ ग्रंथ

1 औरत के हक में, तसलीमा नसरीन, पृष्ठ 99

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

2 अग्निगर्भा, अमृतलाल नागर, पृष्ठ 23

3 वही, पृष्ठ 23

4 बूंद और समुद्र, अमृतालाल नागर, पृष्ठ 234

5 स्वामी नहीं साथ की तलाश, प्रभा खेतान, हंस, जून, पृष्ठ 33

6 करवट, अमृतलाल नागर, पृष्ठ 131

7 अग्निगर्भा, अमृतलाल नागर, पृष्ठ 52

8 कायाकल्प, प्रेमचंद, पृष्ठ 241

9 बूंद और समुद्र, अमृतलाल नागर, पृष्ठ 61-62